विपक्ष के गांधी

विपक्ष ने संयुक्त रूप से गोपाल कृष्ण गांधी को उप राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार चुना है। उन्हें विपक्ष के 18 दलों का समर्थन हासिल है। खास बात यह है कि उन्हें जेडीयू ने भी अपना सपॉर्ट दिया है, जिसने राष्ट्रपति पद के लिए सत्तापक्ष के साथ जाने का फैसला किया था। इस बार विपक्ष ने अपना कैंडिडेट चुनने में सत्ता पक्ष से ज्यादा तत्परता दिखाई है और सत्ता पक्ष को दबाव में ला दिया है। संख्या बल के हिसाब से गोपाल कृष्ण गांधी का जीतना मुश्किल है क्योंकि सत्ता पक्ष के सांसदों की संख्या ज्यादा है। लेकिन विपक्ष के लिए प्रायः हमेशा ही राष्ट्रपति और उप राष्ट्रपति के चुनावों का प्रतीकात्मक या वैचारिक महत्व ज्यादा रहा है। अपने उम्मीदवार के चयन के जरिए विपक्ष देश को एक संदेश देने की कोशिश करता है। इसके पीछे यह सोच काम करती है कि लोकतंत्र केवल बहुमत के मूल्यों से नहीं चलता। यह ठीक है कि व्यवस्था के संचालन संबंधी निर्णय बहुमत से ही लिए जाते हैं, मगर सिस्टम की सार्थकता इसी में है कि महत्वपूर्ण फैसलों में अल्पमत की आवाज भी शामिल हो। इसे ध्यान में रखकर ही गोपाल कृष्ण गांधी को चुना गया है। वह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के पोते हैं, लेकिन यह ज्यादा बड़ी बात नहीं। अहम यह है कि वह गांधीजी के मूल्यों और आदर्शों के प्रति समर्पित हैं। उन्होंने अपने जीवन में गांधीवाद को उतारा और उच्च पदों पर रहते हुए भी सादगी और सच्चाई के रास्ते पर चले। जब वह प. बंगाल के राज्यपाल थे, तब राज्य में बिजली संकट को देखते हुए उन्होंने राजभवन में बिजली के उपयोग में कटौती की पहल की थी। राज्यपाल के रूप में वह राज्य प्रशासन को लेकर अपने विचार खुलकर रखते रहे। नंदीग्राम में हुए किसान आंदोलन के समय उन्होंने तत्कालीन लेफ्ट सरकार को आड़े हाथों लिया था। तब उन्होंने कहा था कि मैं अपनी शपथ के प्रति इतना ढीला रवैया नहीं अपना सकता, अपना दुख और पीड़ा मैं और अधिक नहीं छिपा सकता। एक बार वे सीबीआई को 'सरकारी कुल्हाड़ी' की संज्ञा भी दे चुके हैं। साल 2015 में एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा था- 'गोरक्षा के नाम पर हो रही हत्या को किसी तरह से जायज नहीं ठहराया जा सकता।' वह लोकपाल को लेकर सरकार के लचर व्यवहार पर कई बार सवाल उठा चुके हैं। ऐसे व्यक्ति को सामने रखकर विपक्षी दलों ने समाज में गांधीवादी मूल्यों की प्रासंगिकता को रेखांकित किया है। गांधी ने जीवन में सादगी और शुचिता की वकालत की थी। वे अत्यधिक उपभोग पर आत्मसंयम को तरजीह देते थे और सभी प्राणियों के प्रति करुणा को मानव जीवन के लिए जरूरी मानते थे। आज जब समाज में स्वार्थ, दिखावा और आक्रामकता बढ़ रही है, तब गांधी के आदर्शों की सख्त जरूरत है। जीत-हार अपनी जगह लेकिन यह संदेश भी कम महत्वपूर्ण नहीं है।

कैसे करूं प्रोटेस्ट

कई दिनों से एक प्रोटेस्ट का प्लान कर रहा हूं लेकिन बीच में ही छोड़ देता हूं। छोड़ क्या देता हूं, सच बात तो ये है कि छोड़ना ही पड़ता है। न छोड़ूं तो दुनिया से छूट जाऊं! प्रोटेस्ट करने वालों का इतिहास यही बताता है। एक भी प्रोटेस्टर ऐसा नहीं दिखा जिसके कपड़े न फटे हों! आप जंतर-मंतर पर खड़े-खड़े प्रोटेस्ट-तपस्या कर रहे हैं कि आते ही रिपोर्टर बाइट ले ले! हाथ में पोस्टर है जिस पर लिखा है - मेरे नाम नहीं!

नॉट इन इस उस के नेम!

राम का नाम बदनाम ना करो!

दिल्ली की सड़ियल और अड़ियल गरमी पसीने छुटा रही है। पोस्टर थामे हाथ थक रहे हैं लेकिन क्या करें ऐन रणस्थल से भागा तो नहीं जा सकता! सड़ी गर्मी और भूख-प्यास को दो-तीन घंटे खड़े-खड़े झेलने के बाद भी टीवी देखना पड़ता है कि मेरी वाली बाइट किस-किस चैनल ने लगाई और कितनी देर गालियां पड़ीं!

अपने स्मार्ट फोन पर दूसरों से नजर बचाकर देखना पड़ता है कि कितने चैनलों में कितनी देर चेहरा टीवी में दिखा ताकि कोई कह सके कि भाई साब आज तो आप छा गए! और जबाव में आप किसी फिल्मी हीरो की तरह कहते हैं-मैं कुछ समझा नहीं! और कहने वाला, टीवी में अपने होने के प्रति मेरी उदासीनता का कायल होकर जाये कि देखो कितना महान है!

लेकिन इन दिनों तो कुछ ऐसे बेशर्म एंटी प्रोटेस्टर आ जाते हैं जो पवित्र प्रोटेस्टर से सवाल पूछ कर खटिया खड़ी करने लगते हैं कि तुमने तब प्रोटेस्ट क्यों नहीं किया? इसके लिए क्यों नहीं किया और इसी के लिए क्यों किया, मानो कह रहे हों कि क्या वो तुम्हारा बाप लगता था?

आप कहेंगे सब कुछ हमीं से करवाआगे? कुछ तुम भी तो करो। वो कहेगा मैं क्यों करूं? मेरे पास क्या करने को काम नहीं है। तुम लुटियन्स वाले, तुम जिमखाने वाले, तुम आजादी वाले, तुम पाक वाले, तुम आतंकवाद वाले। एक तो प्रोटेस्ट करूं और ऊपर से लात खाऊं! मुझे लगता है फिल्म दीवार के रिलीज के पहले तक प्रोटेस्ट-कर्म बड़ा ही पवित्र था। तब जंतर-मंतर पर प्रोटेस्ट नहीं किए जाते थे, इंडिया गेट के लंबे चौड़े लॉन्स पर किए जाते थे। आप कितना ही बड़ा प्रोटेस्ट कर लें, हजारों आदमी ले आएं तो भी उस मैदान में ऊंट के मुंह में जीरे बराबर नजर आते। आसपास के लो÷ हमदर्दी जताते गर्मी है भैया! कुछ सुस्ता लो, बाद में कर लेना! हम पांच साल से कर रहे हैं। एक साथ नहीं करते, किश्तों में करते हैं। दफ्तरों के लंच टाइम और शाम पांच बजे के आसपास, दम लगाकर नारे लगाते हैं वरना पोस्टर पेड़ पर चिपका देते हैं। लेकिन तब आजकल वाली फजीहत नहीं थी कि जनहित में प्रोटेस्ट करने के बाद ये सुनना पड़े कि उसके लिए क्यों नहीं किया? इस तरह के बकवास सवाल पूछने की बीमारी तो दीवार ने लगाई! कैसे? अरे भैया अमिताभ बच्चन का वो डायलाग याद है ना जिसमें जब उसका भाई शशि कपूर अमिताभ से दस्तखत करने के लिए कहता है तो अमिताभ कहता है, जाओ पहले उससे दस्तखत कराके लाओ, जिसने मेरे हाथ पर लिख दिया था कि मेरा बाप चोर है। बेचारे प्रोटेस्टरों से तरह-तरह के सवाल पूछने की बुरी आदत दीवार के इसी डायलाग से पड़ी जो कहेगा-जाओ पहले उसके लिए प्रोटेस्ट करो, इसके लिए करो, इन सबके लिए करो, तब मेरे भाई तुम जहां कहोगे मैं वहीं प्रोटेस्ट कर दूंगा! दीवार का ये मुआ डायलाग न होता तो हर आदमी प्रोटेस्टर को उसके कर्तव्य न बताता रहता! पांच हजार साल पुराना अपना इतिहास! अगर सबके लिए प्रोटेस्टर सबके लिए प्रोटेस्ट करने लग गया तो अगले पांच हजार साल तक करता रहेगा! ए कैसे करूं प्रोटेस्ट?

आसमान से बरसता मौत का कहर

आकाशीय बिजली गिरने की खबर पर कम ही ध्यान जाता है, पर जब यह पता चले कि हाल में, बिहार में एक ही दिन में आकाशीय बिजली की चपेट में आकर दो दर्जन से ज्यादा मौतें हो गईं तो इस समस्या पर विचार करना जरूरी लगता है। उत्तराखंड और यूपी में भी कुछ मौतों की खबर है। पिछले साल तो बिहार, यूपी, झारखंड और मध्य प्रदेश में मानसून के दौरान दो दिनों के भीतर 117 जानें आसमानी बिजली के कारण चली गई थीं। इससे लग रहा है कि हम इस प्राकृतिक आपदा के आगे बिल्कुल असहाय हैं। जबकि पश्चिमी देशों में तो आसमानी बिजली की चपेट में आकर इतनी मौतें नहीं होतीं। तो आखिर हमारे देश में ऐसी समस्या क्या है। एक प्राकृतिक आपदा के तौर पर आकाश से गिरती बिजली के आगे इन्सान आज भी बेबस है तो साइंस की तरक्की पर हैरानी होती है और उन इंतजामों को लेकर भी, जो आकाशीय बिजली के प्रकोप को कम नहीं कर पाते हैं। हालांकि मौसम विभाग की ओर से रेडियो-टीवी पर मौसम के पूर्वानुमानों में आकाशीय तड़ित की जानकारी दी जाती है, पर वह इतनी पुख्ता ढंग से नहीं बताई जाती। यह आपदा इनसानों के साथ-साथ जानवरों को भी अपनी चपेट में ले लेती है, जिसके कारण बहुमूल्य पशुधन नष्ट हो जाता है। वैसे तो भवनों के निर्माण के वक्त तड़ित अवशोषी इंतजाम करने की सलाह दी जाती है, पर सवाल यह है कि बस स्टैंड, झोपड़ियों में, खेतों में काम करते वक्त या फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होने पर क्या कोई इंतजाम हमें आसमान से लपकती मौत से बचा सकता है? दुनिया में तकरीबन हर रोज जो हजारों तूफानी बारिशें होती हैं और उनसे करीब सौ बिजलियां हर सेकंड धरती पर गिरती हैं, पर विकसित देशों में उनसे कभी-कभार ही मौत होती है। पर भारत जैसे मुल्क में गिरती बिजलियां अकसर बुरी खबर बन जाती हैं। आंकड़ों के मुताबिक बीते एक दशक में हमारे देश में आकाशीय बिजली की चपेट में आने से हजारों से ज्यादा लोगों की जान जा चुकी है। इनमें मध्य प्रदेश में सबसे ज्यादा (3801) मौतें हुई हैं। यह शोध भी सामने आया आ चुका है कि बिजली गिरने के दौरान मोबाइल फोन का प्रयोग जानलेवा साबित हो सकता है। आकाशीय बिजली से मौतों की संख्या में बढ़ोतरी का एक कारण यह बताया जा रहा है कि जंगलों और गांव-कस्बों व शहरों में विकास कार्यों के चलते पेड़ों की बड़ी संख्या में कटाई हो रही है, जिससे उसका प्रकोप बढ़ गया है। कानपुर स्थित सीएसए यूनिवर्सिटी के मौसम विज्ञानी अनिरुद्ध दूबे का इस बारे में मत है कि जब पेड़ों की संख्या अधिक थी तो आकाशीय बिजली ज्यादातर पोली जमीन और पेड़ों पर गिरती थी। लेकिन अब ऐसी जमीनें कम हो गई हैं और पेड़ भी नहीं बचे हैं। इसलिए प्रकृति के इस कोड़े से होने वाला संहार बढ़ गया है। साइंस की नजर से देखें तो पता चलता है कि आकाशीय बिजली की घटना बादलों में होने वाले इलेक्ट्रिक चार्ज का परिणाम है और यह तब होती है, जब पानी से भरे किसी बादल की निचली सतह में भारी मात्रा में ऋणात्मक आवेश जमा हो, पर उसकी ऊपरी परत में धनात्मक आवेश होता है। जब धरती की सतह के नजदीक गर्म और नम हवा तेजी से ऊपर की ओर उठती है और इस प्रक्रिया में ठंडी होती है तो पानी से भरे तूफानी बादलों का जन्म होता है। विज्ञान की भाषा में क्यूमलोनिंबस कहलाने वाले 44 हजार ऐसे तूफानी बादल कहीं न कहीं बनते रहते हैं और उनसे ही आकाशीय बिजली की लपक धरती की ओर झपटती है। आकाशीय बिजली या तड़ित का यह रहस्य तो ढाई सौ साल पहले 1746 में बेंजमिन फ्रैंकलिन के समय में ही जान लिया गया था। गौर करने वाली बात है कि दो वस्तुओं की रगड़ से या तारों की आपसी घर्षण से जो स्पार्क पैदा होता है, अकसर उसकी लंबाई एक सेंटीमीटर या उससे कम होती है, जबकि आकाशीय तड़ित की लंबाई पांच किलोमीटर या उससे भी ज्यादा हो सकती है। इसके अलावा आकाशीय बिजली में दसियों हजार गुना एम्पीयर का करंट होता है, जबकि आमतौर पर घरों में दी जाने वाली बिजली में 20 एम्पीयर का करंट होता है। चूंकि आकाशीय बिजली एक बड़ी परिघटना है, इसलिए भौतिकी में इसे लेकर अनेक अनुसंधान होते रहे हैं। यह भी ध्यान में रखने वाली बात है कि कार-बसों में बैठे लोगों से ज्यादा आकाशीय बिजली की मार उन पर पड़ती है जो खुले स्थानों में होते हैं। कार आदि की धातु की छत और वाहन का ढांचा तड़ित के आवेश को छितरा देता है और वह बिजली धरती में समा जाती है। पर खुले स्थानों में बिजली सीधे मनुष्यों या जानवरों पर गिरती है। इन हादसों की संख्या को देखते हुए बड़ी जरूरत इसकी है कि आकाशीय बिजली के प्रहार से गरीबों को बचाया जाए। क्या हमारी सरकार और मौसम विभाग की आंखें यह आसमानी बिजली खोल सकेगी?

मोबाइल में गुम बचपन

आजकल पेड़ आमों से लदे हैं। इन दिनों आम खुद ही मजबूरी में नीचे गिरने लगे हैं क्योंकि आम को भी पता है कि पत्थर मारने वाला बचपन अब मोबाइल में व्यस्त है। जिस पार्क में मैं कई सालों से सैर करने जाती हूं वहां चारों ओर जामुन बिखरे मिलते हैं। कुछ साल पहले तक उन पेड़ों पर बच्चे चढ़कर जामुन तोड़ते हुए दिखा करते थे। वे कुछ जामुन मुंह में डालते, कुछ जेबों में ठूंसते और कुछ मुट्ठियों या झोलियों में भर-भर ले जाते। अब नदारद हैं। मोबाइल ने बच्चों का बचपन छीन लिया है। यही डायलॉग मैंने पांच-सात बरस के एक छोटे बच्चे के माता-पिता के सामने बोला तो उन्होंने रुआंसा-सा होकर प्रतिक्रिया दी-आप बचपन की बातें करते हैं, बच्चों ने तो हमारे मोबाइल ही छीन लिये हैं। जब देखो हमारे हाथ से छीनकर भाग जाते हैं और मोबाइल पर गेम खेलने लगते हैं। इस पर बच्चे के दादा ने माथे पर हाथ रखकर कहा-तुम बचपन और मोबाइल को रो रहे हो, मैं कहता हूं कि इस मोबाइल ने तो हमारे बच्चे ही छीन लिये हैं। इस बात का अर्थ पूछे बिना मुझसे रहा नहीं गया। जवाब मिला-घर में जो बड़े बच्चे हैं, वे मोबाइल पर झुके गूगल पर कुछ ढूंढने में जुटे हैं। और जो छोटे हैं, वे मोबाइल पर गेम और कार्टून देख रहे हैं। उनके पास हमारे लिये एक मिनट का भी समय नहीं है। उस बुजुर्ग ने गहरी चिन्ता जताते हुए कहा कि अब बच्चे हमारी गोदी में बैठने नहीं आते बल्कि किसी भी कोने में बैठ कर अपनी गोदी में मोबाइल रख कर यूं आंखें गड़ाये हैं, मानो घर में रखे रामचरितमानस के अखण्ड पाठ की कोई लाइन बिना पढ़े ना छूट जाये। सुना है कि मोबाइल में एक लेटेस्ट एप्लीकेशन आई है कि एक घंटा मोबाइल नहीं छुओ तो मोबाइल से आवाज़ आती है-अरे भाई जिन्दा हो या सो गये? किसी महफिल में चले जाओ, मोबाइल की चर्चा हुए बिना नहीं रहती। सब गरीबी की रेखा से नीचे बसर कर रहे लोगों की तरह दुखी हैं। कुछ साल पहले तक ना तो लम्हे-लम्हे की रिकार्डिंग हुआ करती थी और ना ही फोटोग्राफी। सब कुछ दिलों पर अंकित रहा करता। पर अब यह सब मोबाइलों से हो रहा है। और दिल किसी दिवालिये की तिजोरी की तरह खाली भड़-भड़ कर रहे हैं।

इनसानियत की शक्ति

एक दिन मूसलाधार बारिश में रात में फिलाडेल्फिया के एक छोटे से होटल में एक अधेड़ दम्पति ने रात बिताने के लिए कमरे की मांग की। पुरुष बोला-हम यहां के सभी होटलों में घूम आए हैं। कहीं भी स्थान नहीं है। इस पर क्लर्क बोला-यहां तो सब कमरे भरे हुए हैं। क्या आप दोनों मेरे कमरे में रहना पसंद करेंगे? कमरा बहुत छोटा है। यात्री बोला-लेकिन आप कहां रहेंगे? क्लर्क ने कहा-मैं तो यहां मेज पर भी आराम से सो सकता हूं। कुछ दिनों बाद उस क्लर्क के नाम एक पत्र आया। उसमें न्यूयॉर्क आने का निमंत्रण व आने-जाने का टिकट भी था। न्यूयॉर्क पहुंचने पर क्लर्क को पता लगा कि जिस व्यक्ति ने उसे निमंत्रित किया है, वह वही व्यक्ति है जिसने तूफानी मौसम में उसके कमरे में रात बिताई थी। वह अमेरिका के प्रसिद्ध न्यायाधीश विलियम वेलफोर्ड थे। वेलफोर्ड उसे न्यूयॉर्क के एक होटल में ले गए जहां बोर्ड लगा हुआ था-वेलफोर्ड होटल। वेलफोर्ड बोले-यह होटल मैंने तुम्हारे लिए बनवाया है। आज से तुम इस होटल के मैनेजर हो। तुममें इनसानियत है और बड़े से बड़ा दायित्व को निभाने के लिए इससे अधिक किसी चीज की आवश्यकता नहीं है।

लालू बनाम नीतीश

बिहार की राजनीति एक बार फिर उथल-पुथल की ओर बढ़ रही है। लालू प्रसाद और उनके परिवार पर एक के बाद एक लगते घोटाले के आरोपों से जेडीयू की बेचैनी बढ़ती जा रही है। उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के खिलाफ सीबीआई द्वारा एफआईआर दर्ज कराए जाने के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का धैर्य जवाब दे गया। पार्टी की एक बड़ी बैठक बुलाकर उन्होंने आरजेडी को यह कड़ा संदेश भिजवाया कि इस मामले में कोई समझौता संभव नहीं है। या तो तेजस्वी ठोस तथ्यों के आधार पर जनता के सामने खुद को बेकसूर साबित करें या पद छोड़ दें। आरजेडी भले ही बाद में इस अल्टिमेटम के लिए नीतीश कुमार के प्रो-बीजेपी रवैये को जिम्मेदार ठहराए, लेकिन यह हकीकत है कि नीतीश की राजनीति किसी जातीय समीकरण पर नहीं टिकी है। उनकी अकेली राजनीतिक पूंजी साफ छवि है जो भ्रष्टाचार सहन न करने के उनके दावों की विश्वसनीयता पर निर्भर करती है। ऐसे में अगर वह तेजस्वी यादव के खिलाफ दायर एफआईआर को नजरअंदाज करते दिखते हैं तो उनकी राजनीति का आधार ही खतरे में पड़ जाएगा। दूसरी तरफ लालू प्रसाद के लिए मुश्किलें बढ़ गई हैं। अपनी राजनीतिक विरासत तेजस्वी को सौंपने के संकेत वे पहले ही दे चुके हैं। तेजस्वी का उप मुख्यमंत्री पद छोड़ना, या फिर इसके लिए उनका नीतीश कुमार से लड़ना और सरकार से बाहर जाना- दोनों ही रास्ते उनके लिए संकट पैदा करने वाले हैं। अगर वह इस मसले पर गठबंधन तोड़ते हैं तो केंद्र और राज्य, दोनों जगह एक साथ सत्ता से बेदखल हो जाएंगे।

व्यथित मन से उपजी टीस

'पीड़ा अपनी-अपनी' कविता-संग्रह के सर्जक कुलभूषण कालड़ा की उत्तर भारत के रचनाधर्मियों में विशिष्ट पहचान है। इनका रचना-संसार कविता तक सीमित न रहकर, बाल-कहानी, कहानी, उपन्यास आदि तक विस्तृत है। यह कृति कवि के पांच बहुचर्चित कविता-संग्रहों के प्रकाशन के अनंतर साहित्य-कानन का छठा पुष्प है। कविता के लिए अनुभूति तथा अभिव्यक्ति का समान महत्व है। अभिव्यक्ति का महत्व अनुभूति पर निर्भर है। अनुभूति के अभाव में कविता निस्सार है तो अभिव्यक्ति के बिना आकर्षण रहित। अनुभूति का आधार अंतर और बाह्य जगत है। कवि का काव्य उसके आत्मभाव का प्रतिबिंब होता है, परंतु प्रत्येक रचनाकार की निजी शैली होती है। कवि कुलभूषण का कविता संसार अपने समय का दर्पण है और इनका निजी 'कविता-मुहावरा' भी है। आज सांसारिक प्राणी की अपनी-अपनी पीड़ा है। कवि के कथन में इस पीड़ा की सहज झलक मिलती है-'दुःखों और पीड़ा का जिक्र न कर सकने की अवस्था में चिंताग्रस्त हरेक व्यक्ति शायद शारीरिक भाषा गढ़ लेता है। एक अकथ्य तनाव की झलक उसके चेहरे पर भली भांति दिख ही जाती है। कई बार उसके हंसते आंसू बहुत कुछ कह जाते हैं।' पीड़ा के भी प्रकार होते हैं - कुछ पीड़ाएं छत पर खड़ा होकर हल्ला करती हैं और लोग कुछ पीड़ाओं को सिगड़ी में रख अंगारे की तरह तापते रहते हैं। पीड़ा-जनित हृदय मसोस कर रह जाता है प्राणी।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. अभिमान, घमंड, अनुमान 4. बादल, मेघ, जलद (सं) 6. अधिकार वाला, अधिकारी 8. गति, सामंजस्य, समा जाना 10. कारावास, जेल 11. जोर, शक्ति, जान, सांस 12. राजाओं के रहने का भवन 15. मालामाल, अमीर, धनवान 18. नाव खेने का यंत्र 20. 'खन' ध्वनि उत्पन्न होना, पायल आदि का शब्द करना 21. मार डाला हुआ, घायल किया हुआ 22. हमेशा, आवाज 23. आग की लपट, ज्वाला 24. झगड़ा, तकरार 25. हीरा।

ऊपर से नीचे

1. दोषी, अपराधी 3. ताश में नौ अंक वाला पत्ता 4. झंडा, पताका 5. गहरा कीचड़, पंक 7. बूंद, अंश 9. मृत्यु के देवता 13. संसार, दुनिया, जग 14. हुजूर, जनाब, सम्मान सूचक एक शब्द (उ.) 16. सच्चा, धर्मनिष्ठ, ईमानवाला 17. अनूठा, बांका, अनुपम, छैला 18. आश्रय, शरण 19. साधुवाद, प्रशंसा 20. पटवारी की ऐसी बही जिसमें खेत संबंधी अनेक बातें लिखी जाती है, एक प्रकार का दानेदार संक्रामक रोग 23. गम, मातम, दुख।

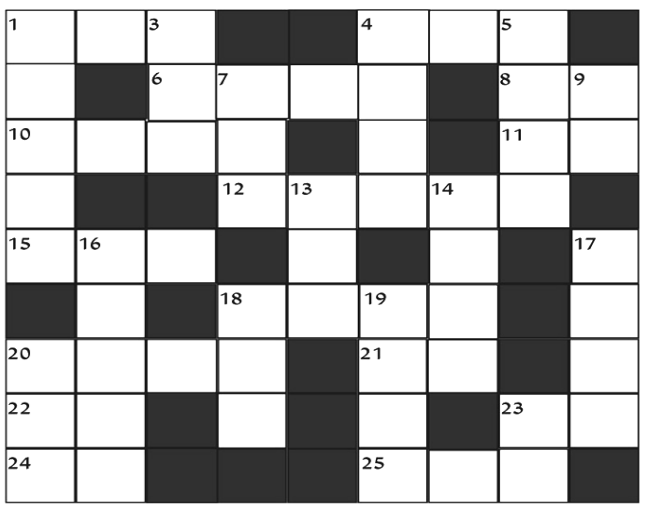

पिछले अंक का हल

स्मृ	ति	■	पा	व	क	■	बे	ल
■	र	ज	नी	च	र	■	■	ट्टू
मु	स्का	न	■	न	म	की	न	■
सा	र	■	स	■	■	ट	ख	ना
फि	■	अ	जा	य	ब	■	रा	जा
र	च	ना	■	था	ल	■	■	य
■	■	धि	■	र्थ	■	स	मा	ज
उ	प	कृ	त	■	आ	वा	ज	■
ल्लू	■	त	■	■	ब	ल	रा	म

सू-दोकू

	9		1	6		2		7
3								
		6					9	
7			5		1		3	
	8			9		6		2
		4					7	
	3				2	9		6
6		7	3					4
	4			1		7	8	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.14 का हल

2	6	3	9	8	7	1	5	4
8	5	1	3	2	4	6	7	9
9	4	7	1	5	6	8	2	3
3	9	8	6	7	1	5	4	2
6	1	2	5	4	3	9	8	7
5	7	4	8	9	2	3	1	6
1	2	6	7	3	5	4	9	8
4	8	5	2	6	9	7	3	1
7	3	9	4	1	8	2	6	5

राशिफल

मेष- आज आपको शासन द्वारा सम्मानित किए जाने की संभावना रहेगेगी। आज आप किसी व्यक्ति, बैंक या संस्था से ऋण लेने से बचें। आज पत्नी पक्ष से उत्तम सहयोग प्राप्त होने की संभावना है।

वृष- आज आप पूरे दिन व्यस्त रह सकते हैं। आज रुके हुए कार्य पूरे होने की संभावना है। किसी काम में विनिमय आज दिल खोलकर कर सकते हैं, इससे आगे लाभ मिलने की संभावना है।

मिथुन- आज फिजूलखर्ची से बचें। कुछ अकस्मात लाभ मिल सकता है जिससे आपकी धर्म, आध्यात्म के प्रति रूचि सुदृढ़ होगी। संतान पक्ष से हर्षवर्धक समाचार मिलेगा।

कर्क- भाग्य की दृष्टि से आज का दिन उत्तम रहेगा। आपके परिश्रम का आपको अच्छा फल मिलेगा। आज आप अपनी शान शौकत के लिए पैसे खर्च कर सकते हैं।

सिंह- आज का दिन मिश्रित फलदायक है। मानसिक अशांति, खिन्नता एवं उदासीनता के कारण आप भटक सकते हैं। माता-पिता के सहयोग और आशीर्वाद से दिन के उत्तरार्ध में राहत मिलेगी।

कन्या- आज आपमें निर्भीकता का भाव रहेगा। आप अपने कठिन कार्यों को आज पूरा कर सकते हैं। व्यर्थ व्यय का योग भी बन रहा है। व्यापार में धनलाभ मिलने की संभावना है।

तुला- आज का दिन आपके लिए शुभ है। आपके अधिकार व सम्पत्ति में वृद्धि हो सकती है। आज आप अपने गुरु के प्रति पूर्ण भक्ति भाव व निष्ठा रखें। आज नये कार्यों में इनवेस्ट करना शुभ रहेगा।

वृश्चिक- आज आपका मन अशांत एवं परेशान रह सकता है। व्यापार वृद्धि के लिए किए गए प्रयास सफल होने में समय लग सकता है। यदि कोई विवाद राज्य में लंबित है तो उसमें सफलता मिलने की पूरी संभावना है।

धनु- आज आपकी विद्या और ज्ञान में वृद्धि होगी। भाग्य आज आपके साथ है। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सकती है।

मकर- आज आपको बहुमूल्य वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। अपने व्यवसाय में भी आपका मन लगेगा एवं रूके हुए काम पूरे होंगे। किसी नये कार्य में इनवेस्ट करना पड़े तो अवश्य करें, भविष्य में लाभ मिल सकता है।

कुंभ- आज का दिन नई खोज करने में व्यतीत हो सकता है। सीमित एवं आवश्यकतानुसार ही व्यय करें।

मीन- आज आपकी संतान से संबंधित बहुत समय से लटका हुआ किसी विवाद का हल निकल आने की संभावना है। सामाजिक सम्मान मिलने से आपका मनोबल बढ़ा रहेगा।